Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Nov - 2015

कन्नड के सुप्रसिद्ध नाटककार : डॉ. चंद्रशेखर कंबार और उनका नाटक 'महामाई' के संदर्भ में

एल. पी. लमाणी

विभागध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री शिवलिंगेश्वर महिलमहाविद्यालय, हावेरी (कर्नाटक)

प्रस्तावना:

कर्नाटक राज्य की प्रांतीय भाषा कन्नड है इस भाषा के विविध गद्य साहित्य विधाओं में नाटक परंपरा अत्यंत प्रमुख और समृद्ध रही है । इसके विकास में संस्कृत नाट्य–परंपरा एवं लोक नाट्य–परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । १२ वीं सदी से लेकर २०–२१ वीं तक के काल को कन्नड 'रंगमंच का स्वर्णयुग' कहा जाता है । उसी समय गुब्बी विरण्णा, पु ण्णा कणगाल, वरदाचार्य, गरुढ़ सदाशिव राव, सुब्बया नायडु, एन. बसवराज, डॉ. राजकुमार, हास्य कलाकार नरसिंगराजू, चंदोडीलील, सुधीर आदि रंगकर्मी कलाकारों ने कन्नड रंगमंच के लिए विशाल दर्शक समाज को निर्मित किया है । अतः वास्तव में आधुनिक कन्नड नाटकों का आरंभ टी. पी. कैलासम् से माना जाता है । उन्होंने अपने नाटकों में पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का नाटकीय अंकन द्वारा समाज के घृणित रूप को दर्शाया है और जीर्ण–शीर्ण परंपरागत मूल्यों की खिल्ली उड़ायी है । उन्होंने मानव की आंतरिक प्रवृत्तियों का सफल उद्घाटन, हृदयहीनता, विवेकशीलता आदि का निरुपण किया गया है ।

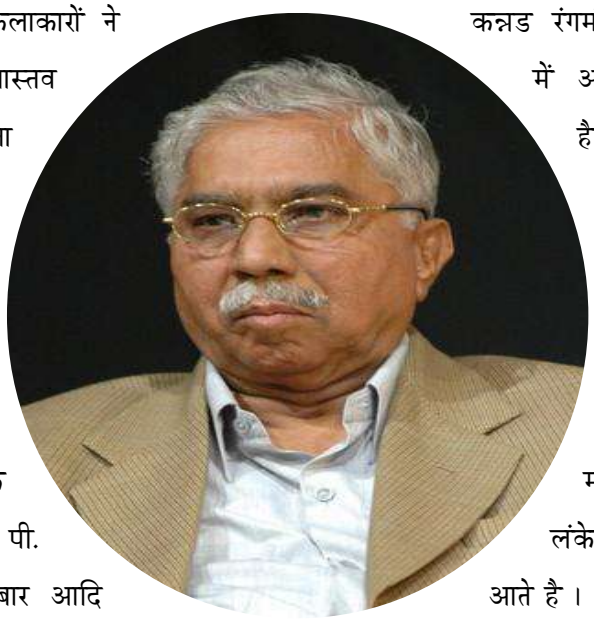

साठोत्तरी कन्नड रंगमंच के महत्वपूर्ण नाटककार के रूप में गिरिश कार्नाड, बी. वी. कारंत, पी. लंकेश, चंद्रशेखर पाटील, पूर्णचंद्र तेजस्वी और चंद्रशेखर कंबार आदि आते है ।

गिरीश कार्नाड ने तो इस समय में अखिल भारतीय ख्याती प्राप्त की है । उनके 'ययाती' में जीवन की सार्थकता की खोज है । 'तुगलक' उनका अत्यंत सफल नाटक रहा है । युगीन का यह चित्रण कन्नड के लिए सर्वथा नवीन माना गया है ।

आज अनेक सुव्यवस्थित नाटक शैलियाँ क्रियाशील रही है । बेंगलूर नाटक प्रदर्शन का प्रमुख केन्द्र बन गया है । 'मेगासिस' पुरस्कार विजेता सुब्बण्णा के जिक्र के बिना कन्नड रंगमंच की चर्चा अधूरी समझी जायेगी । शहर से दूर स्थित एक गाँव में रहकर इन्होंने रंगमंच के क्षेत्र में विलक्षण प्रयोग किये हैं । उन्होंने रंगमंच को साधारण जनता से जोड़ने का सफल प्रयास किया है ।

आजे के समसामायिक संदर्भ के सुप्रसिद्ध नाटककार के रूप में चंद्रशेखर कंबार जी ने यथार्थवादी रंगमंच का निर्माण किया है । इन्होंने कन्नड के रंगमंच को एक जीवंत व्यक्तित्व प्रदान किया जो अन्य भाषाओं के रंगमंच से विशिष्ठ ही नहीं, अपितु अधिक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली भी है ।

चंद्रशेखर कंबार कन्नड भाषा के प्रतिभाशाली नाटककार और जानपद (लोकगीत) कवि है । आप का नाट्य क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है । अपने कन्नड नाट्य साहित्य तथा मंच को अपनी कृतियों एवं सफल निर्देशन के द्वारा समृद्ध बनाया है । आपके नाटकों पर लोक–साहित्य की विशेष छाप रहती है । आप लोक–साहित्य के प्रखांड पंडित है । अब तक आपाके 'जोकुमार स्वामी', 'जयसिदनायक', 'ऋष्यश्रृंग', 'महामयी' आदि कुल १२ नाटक, एक उपन्यास पाँच कविता संग्रह और (लोक जनपद) साहित्य पर एक उत्कृष्ट आलोचनात्मक गंथ प्रकाशित हो चुके हैं । उनके नाटको का कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ।

चंद्रशेखर कंबार जी तीन फिल्मों का निर्देशन भी कर चुके हैं । श्रेष्ठ निर्देशन, श्रेष्ठ संगीत और श्रेष्ठ कथावस्तु के लिए सरकार द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं । 'फुल ब्राइट स्कॉलर' के रूप में आप अमेरिका हो आये हैं ।

प्रसिद्ध निर्देशक बी. बी. कारंत के शब्दों में – 'समस्त देश में कंबार के समान माटी की बू–बास को लेकर, नवीनता और आधुनिकता के साथ सृजनशील नाटककार दुर्लभ है । मेरी दृष्टि में आज के नाटककारों के बीच कंबार अद्वितीय है । मैं तो उनके स्थान पर किसी और को सोच भी नहीं सकता' कहा है । आपको, समग्र साहित्यिक सेवा को परिलक्षित करते हुए केन्द्र सरकार ने २०११ में प्रतिष्ठित 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से सम्मानित किया है । यह सारस्वत लोक और विशेषकर कन्नड भाषियों के लिए गौरव और गर्व की बात है ।

'महामायी' कृति के बारे में ' मृत्यु देवता के ऊपर मनुष्य विजय प्राप्त करने की कथावस्तु दुनिया भर में साहित्य की कथावस्तु बन गयी है । 'मार्कंडेय पुराण' में मृत्यु को भक्ति के माध्यम से विजय प्राप्त किया गया है । 'सति–सावित्री' कथा में ज्ञान के द्वारा, 'हरक्युलेस पुराण' में केवल शारीरिक शक्ति के द्वारा विजय प्राप्त किया है । इस प्रकार की कथावस्तु को बहुत संकीर्ण और नवीन रीति से एक अलग ही मोड 'महामायी' नाटक दिया है । इसमें पूर्वनिर्धारित मृत्यु न छूते हुए, राजकुमारी की रक्षा करना, तथा नायक की वैद्य वृत्ति की कुशलता नहीं, बल्कि उसका प्रेम कार्य करता है ।

'महामायी' का मतलब है मृत्यु देवता । इस नाटक का वास्तविक महत्व मनुष्य स्थिति को नवीन रीति से अन्वेषित करने में है । अर्थात् स्वतंत्रता को निराकरण कनरेवालों के ऊपर, बाहर की शक्तियाँ उनके ऊपर किस प्रकार नियंत्रण रखते हैं, तब जीना किस प्रकार का होता है ? यही प्रमुख विषय वस्तु है । नाटक का नायक संजीव एक अनाथ के रूप में जिंदगी प्रारंभ करता है । बिना भगवान के अस्तित्व की दुनिया में प्रारंभ होने वाली सांकेतिक जिंदगी है उसकी मृत्यु देवता उसे संकट दूर करने की शक्ति देती है, पर उससे स्वतंत्रता को छीन लेती है । संजीव अपनी जिंदगी में किसकी कमी है, उसको ढूँढने, समझने का प्रयत्न करना, प्रेम की महत्ता का शोध करना और आध्यात्मिक चैतन्य को साक्षात्कार के मार्ग से प्राप्त करना ये सब घटनाएँ वास्तव में नाटक को आगे ले चलने वाले प्रसंग हैं । नाटकीय दृष्टि कोण से कहेंगे तो यह प्रक्रिया प्रारंभ तक होती है, जब संजीव राजकुमारी से मिलकर उसमें अनुरक्त होकर अपनी भावनाओं को बाँटते समय । वह राजकुमारी से कहता है कि – 'तुम से विवाह करना है तो मुझे मेरा स्वातंत्र्य चाहिए, वह मुझे प्राप्त होना ही चाहिए । स्वतंत्रता की महत्ता और अनिवार्यता को तुमने ही मुझे समझाया । इसीलिए मैं आप को कृतज्ञता अर्पित करता हूँ ।' वास्तव

में मानव अपनी स्वतंत्रता को न पहचानते हुए अपनी चारों ओर भयानक नरक की सृष्टि की है । स्वतंत्रता का मतलब होता है मानव–मानव बनकर जीना । मगर महामायी उसके बदले चारों ओरमृत्यु की जाल बिछा देती है ।

इस प्रकार उसकी स्वतंत्रता की उत्कट इच्छा ही उसे महामायी का सामना करने की शक्ति देती है । जीवन के ऊपर मृत्यु सवार करने की शक्ति को संजीव तिरस्कार करता है । मगर अंत में मृत्यु नामक चीज, मानव स्थिति का तार्किक अंत्य ही है इस विचार को स्वीकार करता है ।

इस नाटक में कंबार जी नाटक, निरूपण और काव्य तीनों को एकत्रित किये है । संवाद, शिल्प और नाटकीय संघर्षों का सम्मिलन इस नाटक में है । कथन और विषयात्मक तंत्रों का उपयोग किया गया है । 'महामायी' नाटक, नाटककार, कवि, उपन्यासकार को एक साथ एकत्रित करके एक कलाकार के द्वारा निर्मित एक अद्‌भुत और विशेष कृति है । अलग–अलग आधारों से चुने हुए विस्मयात्मक संकेतों की मालायें भरपूर है । उनकों दृश्यों के माध्यम से और काल्पनिक शक्तियों के आधार पर इस्तेमाल किया गया है । वास्तव में यह नाटक समकालीन भारतीय नाटकों में एक अपना ही विशेष स्थान रखने योग्य है कहने से अतिशयोक्ति नहीं होगी ।